Chapter- ३

हंस और कछुआ

STUDY NOTES

MIND MAP

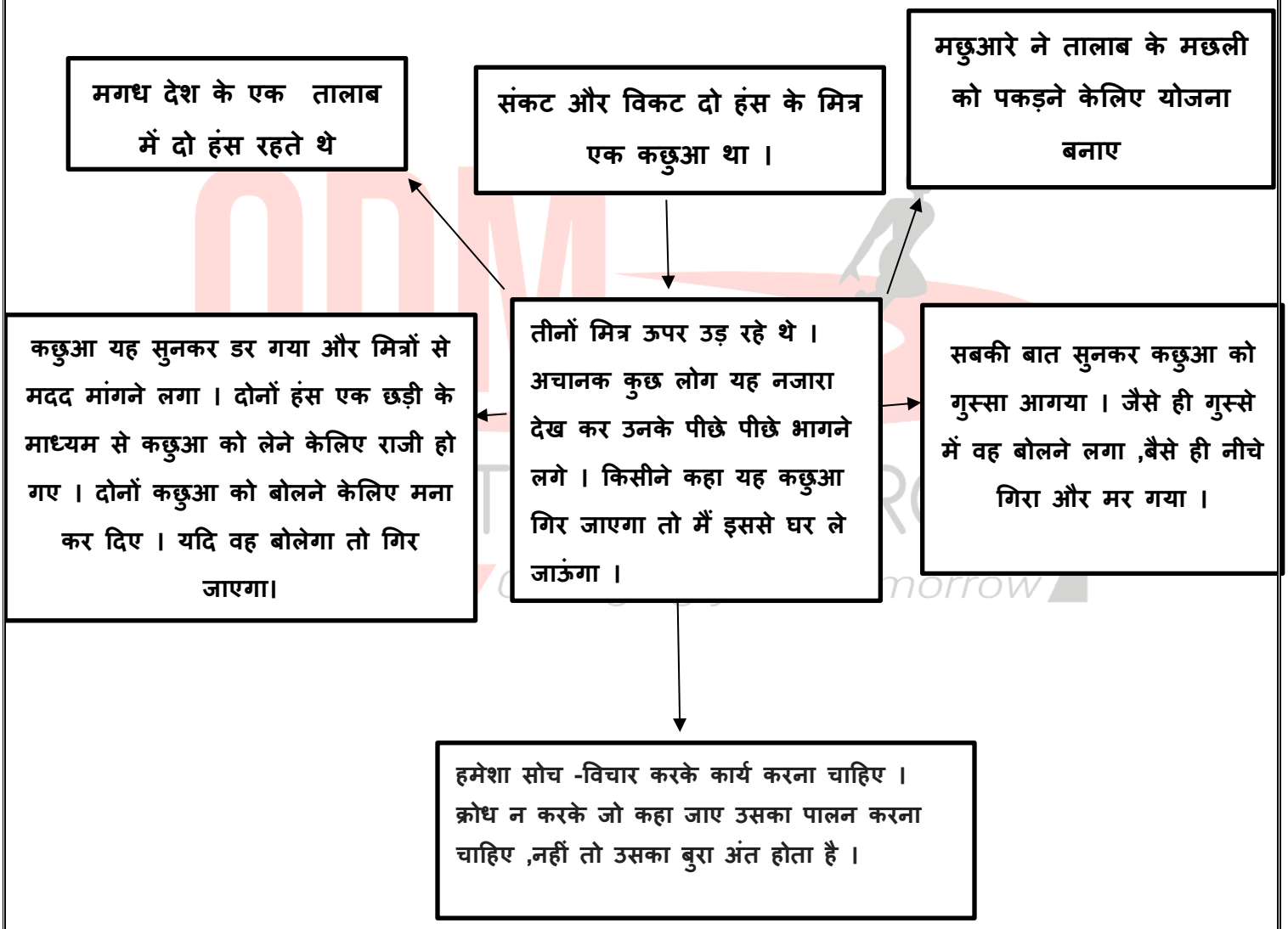

पाठ प्रवेश

मुसीबत में मौन रहना ही सबसे अधिक बुद्धिमान क कार्य है । हमेशा सोच विचार कर कार्य करना चाहिए । क्रोध न करके ,जो कहा जाए उसका पालन करना चाहिए ,नहीं तो उसका बुरा अंत होता है । सही समय पर उचीत बुद्धि का प्रोयोग करने से मुशीवत को टाला जा सकता है । कभी भी छोटे छोटे बातों पर गुस्सा नहीं करना चाहिए । गुस्से का अंत केवल दुखद होता है सुखद नहीं । कुछ लोग ऐसे होते जो आप को गिराने केलिए कई सारे प्रयास करेंगे ,तभी उनकी बात को न सुनकर शांत मन से सही निर्णय लेने से कुछ हद तक मुसीवत दूर हो जाता है ।

पाठ का सारांश

मगच देश में फुल्लोत्मल नामक तालाब में संकत और विकट नाम के दो हंस रहते थे उनका एक मित्र कहा तथा बहुत सारी मछलियाँ भी वहाँ रहती एक बार कुछ मछुआरों ने तालाब में मछलियों और कछुए को देखकर अगले दिन उन पकड़ने की बात कही। संकट और विकट ने यह बात मछलियों तथा कजुर को बता दी। कहां घथरा गया, उसने हसी से अपने बचाव के लिए कहा। कछुए को उड़ना नहीं आता था। हंसों ने एक योजना बनाई कि 'थे एक डे के सिरों को अपनी-अपनी चोच में दबा लेंगे और कछ लकड़ी को मुंह से बीच में पकड़ लेगा। जैसों ने उसे

बोलने के लिए मना किया था। जब वे एक गाँव के ऊपर से उड़ रहे थे, तो पतंग उड़ाते हुए बच्चों ने देखा। वे उनके पीछे भागने लगे कोई कहता कि अगर कछुआ गिरेगा तो वह अपने घर ले जाएगा. कोई कुछ कहता। कछुए से रहा नहीं गया, जैसे ही गुस्से में वह बोलने लगा, वैसे ही नीचे गिरा और मर गया। हमेशा सोच -बिचार कर के कार्य करना चाहिए नहीं तो कछुए जैसा हाल होगा।

कहानी

एक बार की बात है। एक कछुआ और दो हंस आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे।

एक साल बारिश बिलकुल नहीं हुई और जिस तालाब में वे रहते थे, वह सुख गया।

कछुए ने एक योजना बनाई और हंसों से बोला, एक लकड़ी लाओ। मैं उसे बीच में दाँतों से दबा लूंगा और तुम लोग उसके किनारे अपनी चोंच में दबाकर उड़ जाना और फिर हम तीनों किसी दूसरे तालाब में चले जायेंगे।

हंस मान गए। उन्होंने कछुए को चेतावनी दी, तुम्हें पूरे समय अपना मुहँ बंद रखना होगा।

वर्ण तुम सीधे धरती पर आ गिरोगे और मर जाओगे।

कछुआ तुरंत मान गया। जब सब कुछ तैयार हो गया तो हंस कछुए को लेकर उड़ चले।

रास्ते में कुछ लोगों की नजर हंसों और कछुए पर पड़ी। वे उत्साह में आकर चिल्लाने लगे, ये हंस कितने चतुर है। अपने साथ कछुए को भी ले जा रहे है। कछुए से रहा नहीं गया। वह उन लोगों को बताना चाहता था कि यह विचार तो उसके मन में आया था।

वह बोल पड़ा लेकिन जैसे ही उसने मुहँ खोला, लकड़ी उसके मुंह से छूट गई और वह सीधे धरती पर आकर गिर पड़ा। अगर उसने अपने अहंकार पर नियंत्रण कर लिया होता तो वह भी सुरक्षित नए तालाब में पहुंच जाता।

****